ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 137-139

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

पुराणों में श्रीराधा का एक विवेचनात्मक अध्ययन

अवधेश कुमार

प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर, विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ0प्र0), भारत

Received- 23.02. 2022, Revised- 28.02. 2022, Accepted - 03.03.2022 E-mail: akjrfawadhesh@gmail.com

सारांशः – ***विविध पुराणों में विविध प्रसंगों में हमें राधा का उल्लेख मिलता है, लेकिन इसके अन्दर विशेष रूप से लक्षणीय बात यह है कि जिस पुराण में श्रीकृष्ण की व्रज लीला का सबसे विस्तृत और मधुर वर्णन है और जिस पुराण में राधातत्व और कृष्णतत्व की स्थापना में गौड़ीय–वैष्णवों ने प्रधान अवलम्बन बनाया है, उस भागवत–पुराण में राधा का स्पष्ट कोई उल्लेख है। लेकिन फिर भी गौड़ीय गौस्वामियों ने भागवत में ही राधा का अविष्कार किया है। भागवत के दसवें स्कन्ध में रास–लीला के वर्णन में हम देखते है कि रासमण्डल में कृष्ण अपनी एक प्रियतमा गोपी को लेकर गायब हो गये है और दूसरी गोपियों की आड़ में उनहोंने उस प्रियतमा गोपी को लेकर विविध प्रकार की क्रीड़ा की थी।[1] इस व्यापार से सब गोपियाँ व्याकुल हो उठती है और कृष्ण को ढूंढ निकालने का प्रयत्न करती है। खोजते–खोजते यमुना के उस विमल वालुकाराशि में उन्हें कृष्ण के पद–चिन्ह दिखलाई पड़ते है और अकेले नहीं। उसके पास किसी व्रजमाला का पदचिन्ह दृष्टिगोचर होता है। उसके सौभाक्य की प्रशंसा करती हुई गोपियाँ कह उठती है – अनयाराधितो नूनं भगवान् हरिरीश्वरः। यन्नो विहाय गोविन्दः प्रीतो यामनयद्रहः।।[2] भागवत, 10/30/24***

कुंजीभूत शब्द– व्रज लीला, राधातत्व, कृष्णतत्व, गौड़ीय–वैष्णवों, अवलम्बन, गौस्वामियों, अविष्कार, रास–लीला, पदचिन्ह।

हरिवंश के विष्णुपर्व के बीसवें अध्याय में संक्षेप में गोपियों के साथ कृश्ण की रास–लीला का वर्णन है, वहाँ किसी प्रियतमा प्रधाना गोपी का उल्लेख या आभास नहीं है। लेकिन प्राचीन पुराणों में अन्यतम् विष्णुपुराण में विषय–वस्तु और वर्णन है, वहाँ किसी प्रियतमा प्रधाना गोपी का उल्लेख या आभास नहीं है। लेकिन प्राचीन पुराणों में अन्यतम् विष्णुपुराण में विषय–वस्तु और वर्णन की दृष्टि से भगवत पुराण के अनुरूप–रास वर्णन है और यहाँ भी उसी प्रियतमा 'कृतपुण्या मदालसा' गोपी का उल्लेख मिलता है।[3] पद्मपुराण में एकाधिक स्थल पर राधा का नाम है।

रूप गोस्वामी ने अपने उज्जवल–नीलमणि ग्रन्थ में और कृष्णदास कविराज ने अपने चैतन्य चरितामृत में पद्मपुराण से राधा नाम का उल्लेख उद्धृत किया है लेकिन पद्मपुराण से गोस्वामियों ने एक–आद्य श्लोक उद्धृत किये है और आजकल प्रचलित पद्मपुराण में विभिन्न स्थलों पर राधा नाम की एक प्रकार से बहुतायत है, इसी से हमारी शंका और भी जटिल हो जाती है। फिर देखते है कि जयन्ती व्रत माहात्म्य–ख्यापन के प्रसंग में एक बार राधाष्टमी का उल्लेख मिलता है। इसके बाद चालीसवें सर्ग में राधाष्टमी व्रत का माहात्म्य बतलाया गया है।

राधाविषयक उल्लेख से पद्मपुराण तो भरा पड़ा है। इस पुराण के ब्रह्मखण्ड के सप्तम अध्याय में 'राधाष्टमी' के व्रत को पूर्ण विधान है। राधा के जन्म के विषय में कहा गया है कि भादों मास के शुक्लपक्ष के अष्टमी को वृषभान की यज्ञभूमि में राधा का प्राकट्य हुआ। यज्ञ के लिए जब राजा वृषभानु भूमि का शोधन कर रहे थे, तब उन्हें राधा जी मिली और उन्हें लाकर उन्होंने अपनी पत्नी को दिया, जिसेन कन्या का लालन–पालन कर बड़ा किया (श्लोक 39–40)।[4]

राधा का हाल हमने ब्रह्मवैवर्त–पुराण के आधार पर लिखा है क्योंकि विष्णुपुराण, हरिवंशपुराण, महाभारत और श्रीमद्भागवत में राधा का कोई जिक्र नहीं है। पाश्चात्य विद्वानों के मतानुसार ब्रह्मवैवर्त–पुराण उपयुक्त पुराण ग्रन्थों की तरह प्राचीन नहीं है। उसकी भाषा तथा रचना शैली देखने से मालूम होता है कि उसे किसी वैष्णव सम्प्रदाय के तान्त्रिक मत के प्रचार के बाद नवीन वैष्णव धर्म को सृष्टि के लिए रचा है। स्व0 बंकिमचन्द्र चटर्जी के मतानुसार पुराना ब्रह्मवैवर्त–पुराण कहीं विलुप्त हो गया है। आज का जो ग्रन्थ ब्रह्मवैवर्त के नाम से प्रचलित है वह प्राचीन नहीं है। ब्रह्मवैवर्त की प्राचीनता के कारण कुछ लोगों की राय में राधा कोई थी ही नहीं। उसकी कथा केवल वैष्णवों की कपोतकल्पना है। क्योंकि यदि राधा होती कृष्ण से उसका इतना घनिष्ठ सम्बन्ध होता तो विष्णुपुराण आदि विशेषतः श्रीमद्भागवत में अवश्य उल्लेख होता। ब्रह्मवैवर्त के अनुसार श्रीकृष्ण ही जगन्नियन्ता परब्रह्म है। श्रीकृष्ण 16000 गोपियों के साथ विहार किया करते थे उनमें सर्वप्रधान राधिका है। एक बार श्रीकृष्ण अपने भूलोक धाम में किसी गोपियाँ के साथ विहार कर रहे थे। इसकी खबर राधा को लग गयी उसने कृष्ण और विरजा को पकड़ने का विचार किया जिस महल के भीतर कृष्ण विरजा के मौजूद थे उसके द्वार पर श्रीदाम नामक द्वारपाल बैठा था। उसने राधा को किसी तरह भीतर नहीं जाने दिया।

ब्रह्मवैवर्त यह भी लिखा है कि राधिका श्रीकृष्ण की विवाहिता स्त्री थी स्वयं ब्रह्मा जी ने एक दिन वृन्दावन आकर गुप्तरीति से यह पवित्र प्रणय कार्य सम्पादन कराया था परन्तु यह बात कोई जानता नहीं था। मौलाना हसन निजामी देहलवी

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

ने अपनी 'कृष्णा बीती' नामक किताब में लिखा है राधा में ख्याल में कोई औरत न थी जैसा कि आम तौर पर इनको गोपियों में तसब्बर किया जाता है। बल्कि राधा श्रीकृष्ण के जजबयोइश्क का सफाती नाम है। चूंकि हिन्दू जज्बात व सफातकी तस्वीरे बनाया करते थे इस वास्ते उन्होंने कैफइश्क का जिसके मजहब़ (जाहिर करने वाला) श्रीकृष्ण थे। राधा नाम रख दिया और इसकी मूर्ति बना डाली।[5]

श्रीदेवीभागवत् में भी राधा की उपासना तथा पूजा पद्धति का विशेष विवरण मिलने से यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि उस युग में राधा को श्रीकृष्ण का साहचर्य प्राप्त हो गया था। नवम स्कन्ध के तृतीय अध्याय में महाविष्णु की उत्पत्ति चिन्मयी राधा से बतलायी गई है।[6] देवीभागवत् वस्तुतः शक्ति की उपासना तथा महिमा बतलाने वाला पुराण है। यही कारण है कि वह अन्य षक्तियों का भी विपुल वर्णन उपस्थित करता है। श्रीकृष्ण की षक्तिरूपा चिन्मयी राधा की सत्ता, उनके मन्त्र का विधान, पूजा की विधि तथा राधा यन्त्र की महिमा इस तथ्य का द्योतक है कि इस युग में राधा की पूर्ण प्रतिश्ठा वैष्णव धार्मिक जगत् में सम्पन्न हो चुकी थी।7

ब्रह्मवैवर्त पुराण के कृष्णजन्म खण्ड नामक अन्तिम खण्ड में जो परिणाम में इस पुराण के अन्य खण्डों के सम्मिलित अध्यायों से भी बढ़कर है (पूरा अध्याय, संख्या 131), श्री राधा तथा कृष्ण का चरित्र बड़े ही संरम्भ के साथ वर्णित है। पन्द्रहवें अध्याय में 'राधा' के स्वरूप का बड़ा चमत्कारी साहित्यिक विवरण प्रस्तुत किया गया है। जिससे प्रतीत होता है कि कवि उन्हें आदर्श–नारी का प्रतिनिधित्व मानकर अपना काव्य–कौशल अभिव्यक्त कर रहा है। इसी अध्याय में राधा के साथ कृष्ण का विधिवत् विवाह वर्णित है। 27वें अध्याय में राधा–कृष्ण संवाद का प्रसंग है। ब्रह्मवैवर्तपुराण राधा–माधव की लीला से ओत–प्रोत है। गौड़ीय वैष्णवों ने प्रसिद्ध पुराणों में से केवल पद्मपुराण तथा मत्स्यपुराण में राधा का उल्लेख माना है। जीवगोस्वामी ने 'ब्रह्मसंहिता' की टीका में 'राधा वृन्दावने इति मत्स्य पुराणात्' कहकर राधा की स्थिति मत्स्यपुराण में मानी है।[8] ब्रह्मवैवर्त पुराण में राधा–कृष्ण की प्रेमलीला का भरमार है। जीवगोस्वामी और कृष्णदास कविराज ने 'वृद्ध गोपनीय तन्त्र' में भी राधा के बारे में एक श्लोक ढूंढ निकाला है। जीवगोस्वामी ने 'ब्रह्मसहिता की टीका' में 'सम्मोहन तत्र' से भी राधा के सम्बन्ध में एक श्लोक ढूंढ निकाला है।[9] बंगवासी संस्करण के देवीभागवत में बहुतेरे स्थलों में राधा का उल्लेख मिलता है। 'महाभागवत' उपपुराण में भी राधा का उल्लेख दिखाई पड़ता है।[11] इसके अलावा 'राधा तंत्र' जैसे जो ग्रन्थ प्रकाशित हुए है उनका कोई विशेष उल्लेख करने की आवश्यकता है।[12]

राधा का अवलम्बन करके ब्रह्मवैवर्त–पुराण में कृष्णलीला बाकायदा भड़कीली हो उठी है। लेकिन दुःख की बात है कि आजकल प्रचिलत ब्रह्मवैवर्त पुराण के बारे में ही हमारा संशय और अविश्वास सबसे अधिक है। कुछ विद्वानों ने आजकल प्रचलित ब्रह्मवैवर्त पुराण की प्रामाणिकता के बारे में संदेह प्रकट किया है।[13] संदेह का पहला कारण यह है कि मत्स्य पुराण के दो श्लोकों में ब्रह्मवैवर्त पुराण का जो परिचय है उससे आजकल में ब्रह्मवैवर्त–पुराण का जो परिचय है उससे आजकल प्रचलित ब्रह्मवैवर्त पुराण से आकार या प्रकार किसी भी दृष्टि से मेल नहीं है। दूसरी बात यह है कि सारे ब्रह्मवैवर्त में राधा–कृष्ण की प्रेमलीला की भरमार है, लेकिन वैष्णव गोस्वामियों ने इस पुराण की राधालीला का कोई उल्लेख क्यों नहीं किया? ब्रह्मवैवर्त–पुराण में एक और अभिनवत्व है। उन्होंने बड़े धूमधाम से राधाकृश्ण का व्याह भी कराया है। स्वयं ब्रह्मा इस ब्याह में कन्यादानकर्ता है।14 राधा का अवलम्बन करके इस प्रकार के बहुतेरे प्रकार के उपाख्यान और वर्णन बहुधा ऐसे लौकिक निम्नस्तर पर उतर आए है कि प्राचीन पुराणकारों के लिए भी यह हमेशा शोभन या स्वाभाविक नहीं लगा।15

राधा के उत्पत्ति से लेकर कृष्ण के साथ सम्बन्ध होने तक का वर्णन जिस भी साहित्य में होता है वह हमेशा सन्देह के घेरे में रहता है। आज भी कुछ विद्वान ब्रह्मवैवर्त–पुराण, पद्मपुराण, विष्णुपुराण, श्रीमद्भागवतपुराण पर सवाल उठाते हैं। लेकिन अगर सहीं रूप में देखा जाए तो किसी भी कथा या व्यक्ति का उल्लेख ग्रन्थों में तभी होता है जिसका प्रचलन उस समय जनमानस में लोकप्रिय रहा होगा। जिसका प्रमाण हमें पुराणों एवं साहित्य ग्रन्थों में देखने को मिलता है। राधा की प्राचीनता हमें पुराणों से ही पता चलता है। इसके अलावा कुछ साहित्य ग्रन्थ भी है।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते है कि राधा आद्या प्रकृति तथा कृष्ण की वल्लभा है। राधा वर्तमान में भारतीय जनमानस की प्रेरणा बन चुकी है। राधा प्रेम प्रतीक बन चुकी है साथ–साथ देवी रूप का भी अवतार माना जाता है। भारतीय जनमानस के साथ–साथ विश्व के जनमानस में भी राधा कृष्ण के साथ पूजी जाती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुप्त, डॉ0 शशिभूषण, श्रीराधा का क्रमविकास, दर्शन और साहित्य में, पृ0 104
2. भागवत, 10/30/24

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

3. गुप्त, डॉ0 शशिभूषण, श्रीराधा का क्रमविकास–दर्शन और साहित्य में, पृ0 106
4. उपाध्याय, बलदेव, भारतीय वाङ्मय में श्रीराधा, पृ0 16
5. श्रीवास्तव, नवजादिकलाल, श्रीकृष्ण चोरबगान, कलकत्ता, पृ0 128, 129
6. उपाध्याय, बलदेव, भारतीय वाङ्मय में श्रीराधा, पृ0 17
7. वही, पूर्वोक्त, पृ0 18
8. यह गुरूमण्डल–ग्रन्थमाला में कलकत्ता से प्रकाशित हुआ है (14वाँ पुष्प; प्रकाशक..... राधाकृष्ण भोर, कलकत्ता, 1955)।
9. उपाध्याय, बलदेव, भारतीय वाङ्मय में श्रीराधा, पृ0 19
10. यत्राम्ना नाम्नि दुर्गाहं गगैर्गुवती हाहम्। यद्वैभवा–महालक्ष्मी राधा नित्या पराद्वया।।
11. यहाँ विष्णु लक्ष्मी, कृष्ण–राधा, ब्रह्मा–सरस्वती, शिव–गौरी इन सब को अभिन्न मानकर वर्णन किया गया है।
कदाचिद् विष्णुरूपा च बामे च कमलालया। राधया सहिताकस्मात् कदाचित् कृष्णरूपिणी।।
वामांगाधिगता वाणी कदाचिद्ब्रह्मरूपिणी। कदाचिच्छिवरूपा च गोरी वामाकसस्थिता ।। इत्यादि।।
12. गुप्त, डॉ0 शशिभूषण, श्रीराधा का क्रमविकास, दर्शन और साहित्य में, पृ0 114
13. बंकिमचन्द्र, कृष्णचरित्र
14. ब्रह्मवैवर्तपुराण, श्रीकृष्ण–जन्मखण्ड, 15 अध्याय (वंगवासी)
15. गुप्त, डॉ0 शशिभूषण, श्रीराधा का क्रमविकास, दश्र्ान और साहित्य में, पृ0 112

*****